अध्याय 5

वाद्य यंत्र परिचय

आदिकाल से भारत में विभिन्न प्रकार के वाद्यों का प्रयोग होता रहा है और वाद्यों का बड़ा ही महत्वपूर्ण स्थान रहा है। भारतीय संगीत के विभिन्न वाद्यों का प्रमाण, रामायण, उपनिषद, आदि ग्रंथों में मिलता है। कालान्तर में गायन विद्या को समृद्ध करने के लिए विभिन्न प्रकार के वाद्यों काा निर्माण हुआ तथा इन्हें उपयोग में लाया गया। तत्पश्चात् भारतीय सभ्यता के आधार पर विधिवत् चिन्तन मनन पद्धति से मनीषियों द्वारा इन वाद्यों का चार वर्गो में वर्गीकरण किया गया।

शारंग देव द्वारा लिखित ''संगीत रत्नाकर'' में वाद्यों को मुख्य चार वर्गो में इस प्रकार विभाजित किया गया– तत, सुषिर, अवनद्ध और घन।

वाद्यों के प्रमुख चार वर्ग –

1. तत वाद्य–

जिन वाद्यों में तांत अथवा तार द्वारा स्वर उत्पन्न होते है, या तार को छेडने से स्वर की उत्पत्ति होती है, उसे ''तत वाद्य'' कहते है, जैसे सितार, तानपुरा, सांरगी वायलिन इत्यादि। ''वीणा'' तत वाद्यों की जननी मानी जाती है। ये भी दो प्रकार के होते है 1. तत 2. वितत।

2 सुषिर वाद्य –

जो वाद्य फूंक या हवा के माध्यम से वजते है वो वाद्य 'सुषिर' वाद्य की श्रेणी मे आते है। जैसे– बांसुरी हारमोनियम, शहनाई, क्लारनेट, शंख, तुरही आदि।

3 अवनद्व वाद्य–

वाद्यो का तीसरा प्रकार जिसे अवनद्व वाद्य कहते है मुख्यतः जिन्हें ताल वाद्य कहा जाता है। ये चमढ़े से मढ़े हुये होते है। इन वाद्यों के मढ़े हुये चमढ़े पर आघात करने से आवाज उत्पन्न होती है। इन वाद्यों के नाम इस प्रकार से हैः–तबला, पखावज, ढोलक, नगाड़ा, खंजरी, डमरू इत्यादि।

4 घन वाद्य–

वाधों का अन्तिम प्रकार ''घन वाद्य'' कहलाता है। इस श्रेणी के वाद्यों में किसी घातु या लकड़ी के प्रहार से स्वरों की उत्पत्ति होती है। घन वाद्य की श्रेणी में मंजीरा, झांझ जलतरंग, कांचतरंग इत्यादि आते है।

सितार

संक्षिप्त इतिहास

'सितार' तत या तंत्र वाद्य की श्रेणी में आता है। वर्तमान समय के तत वाद्यों में सितार सर्वाधिक लोकप्रिय वाद्य हैं। इस वाद्य के आविष्कार के विषय में विद्वानों के अनेक मत है। कुछ विद्वानों के मतानुसार सितार का आविष्कार तेरहवी, चौदहवी शताब्दी (1296–1316 ई.) में अमीर खुसरों ने, जो कि भारत के प्राचीन शासक अलाउद्दीन खिलजी के दरबार में एक सुप्रसिद्व कवि और संगीतज्ञ हुये थे उन्होने एक वीणा के आधार पर सितार का आविष्कार किया। उस समय सितार पर तीन ही तार रखे गये थे तथा इसका नाम सहतार रख गया था। फारसी मे सह का अर्थ है। तीन संभवतः उसी आधार पर अमीर खुसरो ने वीणा का नामकरण सहतार कर दिया। जिसे आगे जाकर सितार के नाम से पुकारा गया और तीन तार की जगह सात तार लगाये गये।

दूसरे मतानुसार सितार पूर्णतया अभारतीय वाद्य है, और यह वाद्य परशिया से भारत में आया, एक तारा, दो तारा, सहतारा, चहतारा, पचतारा क्रमशः 1, 2, 3, 4 या 5 तार वाले वाद्य आज भी परशिया के लोकसंगीत में व्यवहत है। 14वीं शताब्दी में इस वाद्य के प्रचार में अमीर खुसरों का विशेष हाथ रहा है। इसके बाद 1719 में मुगल बादशाह मोहम्मद शाह के समय में सितार में 3 तारों की वृद्वि हुई। सितार छह तार का हो गया और कुछ समय तक इसी प्रकार चलता रहा। फिर कुछ वर्षो बाद इसमें एक तार बढ़ाकर सात तार कर दिये गये और परदों की संख्या 14 से बढ़ाकर उन्नीस और इक्कीस कर दी गई।

सितार वाद्य का सचित्र वर्णन

1. **तूंबा** : यह सितार के सबसे नीचे का भाग होता है। जो डांड के नीचे रहता है। यह आकार में गोल होता है और विशेष प्रकार की लौकी या कद्दू का बना होता है। यह अन्दर से खाली व हल्का होता है। जब सितार के तार बजते है तो इसी तुंबे के कारण गूंज या झंकार उत्पन्न होती है।
2. **तबली** : तूंबे के ऊपर का भाग जो कि चपटा होता है और लकड़ी का बना होता है, तथा जिस पर धुडच स्थापित करते है। उसे तबली कहते है।
3. **धुड़च** (Bridge) : इसे ब्रिज या घोडी भी कहते है। यह हाथी दांत, लकड़ी, सींग की बनी एक छोटी चौकी के आकार की पटट्री होती है। जो तबली के उपर रखी जाती है। इसी के ऊपर से होकर के तार खुंटियॉ तक जाते है।
4. **लंगोट** : तूंबे की पैंदी में लगी कील को ''लंगोट'' कहते है। इस कील से तार बांधे जाते है। इसे तारदान भी कहते है। यहीं से तार शुरू होकर खुटियों तक जाते है।
5. **डांड** : यह सितार में लकड़ी की पोली व लम्बी डंडी होती है। जो ऊपर एक तख्ती से ढकी होती है। उसे डांड कहते है, इसी भाग में सितार के पर्दे बांधे जाते है।

6. **गुलू** : डांड ओर तूंबे को जोडने वाला स्थान गुलू कहलाता है।
7. **जवारी** : धुड़च या ब्रिज की उपरी सतह को जवारी कहते है। इसी के उपर से होकर तार खुंटियों तक जाते है। वाद्य की झंकार युक्त मधुर ध्वनि इसी से नियंत्रित की जाती है।
8. **परदे** : यह सितार की डांड पर तांत से बंधे हुये पीतल, तांबा या जर्मन सिल्वर की सलाईयों की तरह अर्ध चन्द्राकार टुकडे होते है। उन्हे पर्दे कहते है। इनका दूसरा नाम सारिका अथवा सुन्दरी भी है। सितार पर इन परदों की संख्या 16 से 24 तक होती है। चल ठाठ की सितार में 22 से 24, और 16 परदे वाले सितार को अचल ठाठ का सितार कहते है।
9. **अटि** : खूंटियों की ओर डांड पर पट्टियां होती है। पहली पट्टी जिसके ऊपर से होकर तार जाते है। उसे अटि कहते है।
10. **तारगहन** : अटि से लगभग एक इन्च की दूरी पर हाथी दांत की आड़ी पट्टी होती है। इसके मध्य कई छिद्र होते है। इसे ही तार गहन कहते है।
11. **खुंटियाँ** : डांड में ऊपर की ओर लकडी की गोलाकर कुंजिया होती है। इनके द्वारा ही तार को कसना और ढीला किया जाता है। इन्हें ही खुंटिया कहते है। इनकी संख्या तारों के अनुसार होती है।
12. **तार** : सितार में लंगोट और खुंटियों के मध्य सात तार खिचें होते है। ये सात तार महत्वपूर्ण होते है। इनमें पहला, चौथा छटा और सातवां तार लोहे का और दूसरा, तीसरा व पांचवा तार पीतल अथवा तांबे का होता है।
13. **मनका** : बाज का तार जो कि प्रथम तार होता है और जो धुडच और लंगोट के मध्य एक दांत या कांच का मोती– जिसके छेद में से तार को पिरोया जाता है। उसे मनका कहते है। मनका गोल, चपटा या बतख की शक्ल का होता है। तारों को मिलाते समय सूक्ष्मतर अन्तर को इस मनके की सहायता से ठीक किया जाता है।
14. **तरबें** : सितार के परदों की संख्या के अनुसार तरब के तार भी लगाये जाते हैं। मुख्य सात तार के अलावा परदे के नीचे कुछ और अन्य पतले तार होते है। जिनकी खुंटियां चिकारी की खुंटियों के पास लगी रहती है। इन्हें तरब कहते है। इनकों रागों के लगने वाले स्वरों के अनुसार मिलाया जाता है। इनका मुख्य कार्य परदो के मुख्य स्वरों की प्रतिध्वनि उत्पन्न करना है।
15. **मिजराब** : यह पक्के लोहे के तार की अंगुठीनुमा होती है। दाहिनी हाथ की तर्जनी अंगुली मे इसको पहनकर सितार के तार को आधात करते है। तब सितार बजता है।

सितार के सात तार

1. **पहला तार**– यह लोहे (स्टील) का होता है और इसे बाज का तार या बोल तार कहते है। यह तार मन्द्र सप्तक के मध्यम स्वर में मिलाया जाता है।
2. **दूसरा और तीसरा तार**– ये दोनों तार जोड के तार कहलाते है। इन्हें मन्द्र सप्तक के षडज स्वर में मिलाते है। ये दोनो तार पीतल के होते है।
3. **चौथा तार**–ये लोहे (स्टील) का होता है। इसे पंचम का तार कहते हैं।इसे मंद्र प में मिलाते हैं ।
4. **पॉचवा तार**– यह पीतल का होता है और जोडी के तारो से लगभग दुगुना मोटा होता है। इसे अति

मन्द्र सप्तक के पंचम में मिलाते है। इसे लर्ज का तार भी कहते है।

5. **छटवां तार**– ये स्टील का होता है और मोटाई में चौथी तार से कुछ कम होता है। इसे मध्य सप्तक के षडज में मिलाते है। इसे चिकारी का तार भी कहते है।
6. **सातवां तार**– ये तार भी स्टील का होता है। ये तार सितार के अन्य तारों से पतला होता है और इसे तार षडज सा अथवा मन्द्र सप्तक के पंचम से मिलाते है। इसे चिकारी का तार या पपैया का तार कहते है।

अभ्यास प्रश्न

प्र. 1 सितार के इतिहास पर प्रकाश डालिये।

प्र. 2 सितार का चित्र बनाकर उसके अंगो का वर्णन करें।

प्र. 3 सितार में मुख्य तार कितने होते हैं एवं किन–किन स्वरों में मिलाये जाते हैं।

प्र. 4 सितार में परदों की संख्या कितनी होती है।

प्र. 5 वाद्य यंत्रों को कितने भागों के बांटा है वर्णन करें।

प्र. 6 रिक्त स्थान भरें।

1. सितार..... वाद्य की श्रेणी में आता है।
2. बिलंबित लय में ..... गत बजाई जाती है।
3. रज़ाखानी गत ..... में बजाई जाती है।
4. गायन तथा वादन में संगत का ताल वाद्य ..... है।
5. सितार बजानें हेतु अंगुठीनुमा ..... का प्रयोग होता है।

उ. विलायत खां
इटावा घराना

साहित्य संगीत कला विहीनः।
साक्षात् पशु–पुच्छ विषाण हीनः।।
साहित्य संगीत और कला से विहीन व्यक्ति बिना सींग और पूंछ के पशु समान है।